अमृत वाणी

शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं आती है बल्कि यह एक अदम्य इच्छा शक्ति से आती है।

-महात्मा गांधी,

सेल्फी का जानलेवा जुनून

किसी भी तरह से लोगों में नहीं थम रहा खतरनाक पॉयेन्ट्स पर सेल्फी लेने का जुनून। आए दिन देश के विभिन्न भागों से सेल्फी लेते लोगों के जान गंवाने की हृदय विदारक खबरे आती रहती है फिर भी ऐसा लगता है कि किशोरों से लेकर वयस्कों तक पर उसका कोई असर नहीं होता। फलस्वरूप एक से बढ़कर एक दर्दनाक हादसे हो रहे है। कोई जलप्रपात की पृष्ठभूमि में सेल्फी लेने का प्रयास करता है तो कोई समुद्र के लहरों के बीच कोई पहाड़ी के बैकग्राउण्ड में तो कोई खतरनाक घाटी की, कोई पुल की, कोई चलती ट्रेन की तो कोई कार की, कोई गहराई की तो कोई यथासंभव ऊंचाई की पृष्ठभूमि पर सेल्फी लेने की कोशिश करता है। ऐसा करते कब किसका संतुलन बिगड़ जाय और पलक झपकते उसकी जान दांव पर लग जाय कोई नहीं कह सकता। आसपास खड़े लोग भी इससे पहले कि कुछ सोच या कर पाए सब कुछ खत्म हो जाता है।

युवाओं पर तो सेल्फी का सर्वाधिक पागलपन सवार है। क्या लड़के, क्या लड़कियां दोनों एक समान। बीती घटनाओं से सीख लेने अथवा सावधानी बरतने की कोशिश ही कोई नहीं करता और एक नए हादसे को आमंत्रण दे बैठता है।

हाल ही में पुणे के इंद्रायनी नदी तट पर घूमने गई जुनियर कॉलेज की उन तीन नवयुवतियों को क्या मालूम था कि उनका यह सेल्फी का जुनून पलक झपकते उनकी एक साथी को सदा के लिए उनसे जुदा कर देगा। नदी का बेकग्राउंड और स्पष्ट करके सेल्फी लेने के चक्कर में उन्हें यह पता ही नहीं चला कि कब वे अपना संतुलन खोकर नदी में गिर गई। दो को तो जैसे तैसे बचा लिया गया मगर एक छात्रा की डूबकर मौत हो गई। जुनून के चक्कर में जाने वाले तो चले जाते हैं मगर उनके परिजनों और सगे संबंधियों पर जो दुखो का पहाड़ टूटता है उसका अंदाजा कोई नहीं लगा सकता।

नवयुवा या किशोर ही नहीं कई बार समझदार लोग भी ऐसी भयावह गल्तियां कर बैठते है। पिछले दिनों दिल्ली की एक 33 वर्षीय महिला द्वारा महाराष्ट्र के एक पर्यटन स्थल में इसी सेल्फी लेने की कोशिश में 600 फुट गहरी खाई में गिरकर अपनी जान गंवा दी। यही नहीं यूपी के बाराबंकी जिले में बीच नदी में सेल्फी लेने के शौक में एक ही परिवार के 9 लोगों की डूबने से मौत हो गई थी जिसमें बड़े छोटे सभी सदस्य शामिल थे। इससे बढ़कर हृदय विदारक घटना और क्या हो सकती है।

प्रश्न यह है कि इस जुनून पर लगाम लगे कैसे। जिनके साथ हादसे हो जाएं, मात्र उनका या उनके परिजनों का संभल जाना स्वाभाविक है पर जब तक दूसरे सतर्क नहीं होंगे तब तक हादसों का रूकना आसान नहीं। यह कोई ऐसा मसला भी नहीं जिसे कानून बनाकर या अन्य किसी तरह से रोका जाय। स्वयं और परिवारों की जागरूकता ही इसे रोकने में सहायक हो सकती है। शैक्षणिक संस्थान भी विद्यार्थियों को सचेत करने व समझाइश देने में कुछ हद तक सहयोग कर सकते है।

गोल्डन गर्ल की गोल्डन जीत से महका भारत

फिनलैंड के टैम्पेयर शहर में आयोजित आईएएएफ वर्ल्ड अंडर-20 ऐथलेटिक्स चैंपियनशिप की 400 मीटर दौड़ में उन्होंने गोल्ड मेडल जीता है। देश की अस्मिता पर नित-नये लगने वाले दागों एवं छाई विपरीत स्थितियों की धुंध को चीरते हिमा के जज्बे ने ऐसे उजाले को फैलाया है कि हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा हो गया है। उसने एक ऐसी रोशनी को अवतरित किया है जिससे देशवासियों को प्रसन्नता का प्रकाश मिला हैं। फिनलैंड के टैम्पेयर शहर में उसने स्वर्णिम इतिहास रच दिया है। उससे देश का गौरव बढ़ा है।

हिमा विश्व स्तर पर ट्रैक स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीतनेवाली पहली भारतीय खिलाड़ी हैं। इससे पहले भारत के किसी भी महिला या पुरुष खिलाड़ी ने जूनियर या सीनियर किसी भी स्तर पर विश्व चैंपियनशिप में गोल्ड नहीं जीता है। इस तरह हिमा की उपलब्धि उन तमाम ऐथलीटों पर भारी है, जिनके नाम दशकों से दोहराकर हम थोड़ा-बहुत संतोष करते रहे हैं, फिर चाहे वह फ्लाइंग सिख मिल्खा सिंह हों या पीटी उषा। इस शानदार उपलब्धि पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई दी है। मोदी ने कहा, 'देश के लिए यह बेहद खुशी और गर्व की बात है कि एक किसान की बेटी ने विश्व अंडर-20 चैंपियनशिप की 400 मीटर रिले में गोल्ड जीतकर इतिहास रचा है। हिमा की यह उपलब्धि आने वाले समय में देश के अन्य एथलीटों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।' इस जीत ने अनेक मिथकों एवं धारणाओं को तोड़ा है। अब हम कह सकते हैं कि भारतीयों में भी वह मादा एवं क्षमता है कि वे विश्वस्तरीय ऐथलेटिक्स में अपना परचम फहरा सकते हैं। अब तक तो हम ओलिंपिक हो या ऐसी ही अन्य विश्वस्तरीय प्रतियोगिताएं, अंतिम दौर में पहुंचकर ही खुशी मनाते रहे हैं। लेकिन अब जीत का सेहरा भी हम अपने सिर पर बांधने में सक्षम हो गये हैं, और इसके लिये हिमा को सलाम।

यूं तो भारतीय ओलिंपिक संघ की स्थापना 1923 में हुई, लेकिन मानव जाति की शारीरिक सीमाओं की कसौटी समझे जानेवाले इस क्षेत्र में पहली उल्लेखनीय उपलब्धि 1960 के रोम ओलिंपिक में मिली, जब मिल्खा सिंह ने 400 मीटर दौड़ में चौथे स्थान पर रहकर कीर्तिमान बनाया, जो इस स्पर्धा में 38 वर्षों तक सर्वश्रेष्ठ भारतीय समय बना रहा। चार वर्ष बाद टोक्यो में गुरबचन सिंह रंधावा 110 मीटर बाधा दौड़ में पांचवें स्थान पर रहे। 1976 में मांट्रियल में श्रीराम सिंह 800 मीटर दौड़ के अंतिम दौर में पहुंचे, जबकि शिवनाथ सिंह मैराथन में 11वें स्थान पर रहे। 1980 में मॉस्को में पीटी उषा का आगमन हुआ जो 1984 के लॉस एंजिल्स ओलिंपिक में महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ में चौथे स्थान पर रहीं। एशियाई खेलों में कुछ ऐथलीटिक स्वर्ण जरूर हमारे हाथ लगे। 1951 में प्रथम एशियाई खेलों में लेवी पिंटो ने 100 व 200 मीटर, दोनों दौड़ें जीतीं। मनीला में दूसरे एशियाई खेलों में सरवन सिंह ने 110 मीटर बाधा दौड़ जीती। 1958 में टोक्यो में मिल्खा सिंह ने अपने पदार्पण के साथ ही 200 व 400 मीटर में विजय प्राप्त की। 1970 में बैंकाक में कमलजीत संधू 400 मीटर स्पर्धा में पहला स्थान प्राप्त कर ऐथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। थाईलैंड में 1978 में गीता जुत्शी ने 800 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

देश का एक भी व्यक्ति अगर दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ने की ठान ले तो वह शिखर पर पहुंच सकता है। विश्व को बौना बना सकता है। पूरे देश के निवासियों का सिर ऊंचा कर सकता है। भारत की नई 'उड़नपरी' 18 वर्षीय असमिया एथलीट हिमा दास ने ऐसा ही करके दिखाया है, उसने अपनी शानदार उपलब्धि से भारतीय ऐथलेटिक्स में एक नए अध्याय की शुरुआत कर दी है। जब इस गोल्डन गर्ल की अनूठी एवं विलक्षण गोल्डन जीत की खबर अखबारों में शीर्ष में छपी तो सबको लगा कि शब्द उन पृष्ठों से बाहर निकलकर नाच रहे हैं।

किसी अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक्स ट्रैक पर भारतीय एथलीट के हाथों में तिरंगा और चेहरे पर विजयी मुस्कान, इस तस्वीर का इंतजार लंबे वक्त से हर हिंदुस्तानी कर रहा था। खेतों में काम करने वाली हिमा ने यह अनिर्वचनीय खुशी दी है। इस खुशी के लिये हिमा के कोच निपुण भी बधाई के पात्र है। क्योंकि निपुण को ही हिमा की इस सफलता का श्रेय जाता है। उन्होंने ही हिमा के माता-पिता से बातचीत की और उन्हें कहा कि हिमा के गुवाहाटी में रहने का खर्च वे खुद उठायेंगे, बस आप उसे बाहर जाने की मंजूरी दें। इसके बाद वे हिमा को बाहर भेजने के लिए तैयार हो गए। इस तरह हिमा की कहानी किसी फिल्मी स्टोरी से कम नहीं है। उसे अच्छे जूते भी नसीब नहीं थे। छोटे-से गांव ढिंग में रहने वाली हिमा 6 बच्चों में सबसे छोटी है। लड़कों के साथ खेतों में फुटबॉल खेलने वाली हिमा ने वह कर दिखाया, जिसकी उम्मीद किसी को नहीं थी। फुटबॉल में खूब दौड़ना पड़ता था, इसी वजह से हिमा का स्टैमिना अच्छा बनता रहा, जिस वजह से वह ट्रैक पर भी बेहतर करने में कामयाब रहीं।

हमारे देश में ऐथलेटिक्स को लेकर कभी भी उत्साहपूर्ण वातावरण नहीं बन पाया। प्रतिभावान खिलाड़ियों को औसत दर्जे की ट्रेनिंग के साथ शुरुआत करनी पड़ी। खेल संघ को मिलनेवाली राशि का सही इस्तेमाल भी नहीं होता था। खेलों के साथ हो रही इन विडम्बनापूर्ण स्थितियों से हमें जल्दी उबरना होगा और इसकी पहली आजमाइश 2020 के टोक्यो ओलिंपिक में हिमा दास के साथ ही करनी होगी। क्योंकि उसने अपनी प्रतिभा एवं क्षमता का लौहा मनवाया है, उसने कठोर श्रम किया, बहुत कड़वे घूट पीये हैं तभी वह सफलता की सिरमौर बनी हैं। वरना यहां तक पहुंचते-पहुंचते कईयों के घुटने घिस जाते हैं। एक बूंद अमृत पीने के लिए समुद्र पीना पड़ता है। पदक बहुतों को मिलते हैं पर सही खिलाड़ी को सही पदक मिलना खुशी देता है। यह देखने में कोरा एक पदक हैं पर इसकी नींव में लम्बा संघर्ष और दृढ़ संकल्प का मजबूत आधार छिपा है। राष्ट्रीयता की भावना एवं अपने देश के लिये कुछ अनूठा और विलक्षण करने के भाव ने ही अन्तर्राष्ट्रीय ऐथलेटिक्स में भारत की साख को बढ़ाया है। ऐथलेटिक्स की यह उपलब्धि दरअसल हिमा की उपलब्धि है, युवाओं की आंखों में तैर रहे भारत को अव्वल बनाने के सपने की जीत है। हिमा ने विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष करके अपना रास्ता बनाया। दरअसल समाज में खेल को लेकर धारणा बदल रही है। सरकार भी जागरूक हुई है। कई नई अकादमियां खुलीं हैं जिनका युवाओं को फायदा मिल रहा है। खेलों को प्रोत्साहन देने के प्रयासों में और गति लाने की जरूरत है। खेलों के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर देशभर में फैलाना होगा। नौकरशाही संबंधी बाधाएं दूर करनी होंगी, वास्तविक खिलाड़ियों के साथ होने वाले भेदभाव को रोकना होगा, खेल में राजनीति की घुसपैठ पर भी काबू पाना होगा, तभी एशियाई खेलों और ओलिंपिक में भी हमें झोली भरकर मेडल मिल सकेंगे।

हमारे देश में खेलों को प्रोत्साहित किया जाना जरूरी है। जब हम विश्व गुरु बनने जा रहे हैं तो उसमें खेलों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। क्योंकि खेलों में ही वह सामर्थ्य है कि वह देश के सोये स्वाभिमान को जगा देता है, क्योंकि जब भी कोई अर्जुन धनुष उठाता है, निशाना बांधता है तो करोड़ों के मन में एक संकल्प, एक एकाग्रता का भाव जाग उठता है और कई अर्जुन पैदा होते हैं। फिनलैंड के टैम्पेयर शहर में अनूठा प्रदर्शन करने वाली हिमा भी आज माप बन गयी हैं और जो माप बन जाता है वह मनुष्य के उत्थान और प्रगति की श्रेष्ठ स्थिति है। यह अनुकरणीय है। जो भी कोई मूल्य स्थापित करता है, जो भी कोई पात्रता पैदा करता है, जो भी कोई सृजन करता है, तो वह देश का गौरव बढ़ाता है, जो गीतों में गाया जाता है, उसे सलाम। हिमा शिखर पर पहुंची है तो उस शिखर को छूने के प्रयास रुके नहीं। ऊंचा उठने के लिए असीम विस्तार है।

ललित गर्ग
(ये लेखक के अपने विचार है)

विवादित बयान इत्तेफाक या साजिश

वैसे तो शशि थरूर और विवादों का नाता कोई नया नहीं है। अपने आचरण और बयानों से वे विवादों को लगातार आमन्त्रित करते आएँ हैं। चाहे जुलाई 2009 में भारत पाक के तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और युसुफ रजा गिलानी के बीच हुई बातचीत के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य को बस कागज का एक टुकड़ा जिसका कोई खास महत्व नहीं हैए कहने वाला बयान हो। चाहे इसी साल सितंबर में उनके अपने अधिकारिक निवास की जगह एक फाइव स्टार होटल जिसका खर्च करीब 40000 रुपये प्रतिदिन होए में रहने का विवाद हो। चाहे जब दुनिया मंदी के दौर से गुजर रही हो और सरकारी खर्च में कटौती करने के उद्देश्य से कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की पार्टी नेताओं से फ्लाइट की इकोनोमी कलास में सफर करने की अपील पर व्यंग्य करते हुए इसे कैटल कलास यानी भेड़ बकरियों की क्लास कहना हो। चाहे गाँधी जयंती की छुट्टी का विरोध करना हो। चाहे प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ करना हो। चाहे संसद न चलने देने के कांग्रेस के रुख से असहमति रखना हो। चाहे पत्नी सुनंदा पुष्कर की मौत हो। या फिर पाकिस्तानी पत्रकार मेहर तरार के साथ अफेयर की खबरें हों।

या फिर सबसे ताजा हिन्दू पाकिस्तान के बयान वाला विवाद हो। लेकिन इस बयान पर बात करने से पहले हमारे लिए यह जानना भी जरूरी है कि पिछले साल इन्होंने अपनी किताब इन्लोरियस एम्पायर के सिलसिले में ब्रिटेन के टीवी चैनलों को दिए अपने इंटरव्यू से लाखों लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। इसमें उन्होंने कहा था कि ब्रिटेन की समृद्धि में भारत जैसे उपनिवेशों की लूट का बहुत बड़ा योगदान है। जाहिर है उनके इस बयान से इनकी यह पुस्तक लोगों में चर्चा का विषय बनी।

और अब हाल ही में इन्होंने वाय आई ऐम ए हिन्दू यानी मैं हिन्दू क्यों हूँ इस विषय पर एक पुस्तक लिखी है जिसमें उन्होंने संघ और बीजेपी के हिन्दुत्व और हिन्दू राष्ट्र की विचारधारा पर निशाना साधा है।

आइए अब इनके ताजा बयान या फिर विवाद पर बात करते हैं।

शशि थरूर का कहना है कि अगर बीजेपी दोबारा लोकसभा चुनाव जीतती है तो भारत हिन्दू पाकिस्तान बन जाएगा। अल्पसंख्यकों को मिलने वाली बराबरी खत्म कर दी जाएगी। वो संविधान के बुनियादी सिद्धांतों को तहस नहस करके एक नया संविधान लिखेंगे जो कि हिन्दू राष्ट्र के सिद्धांतों पर आधारित होगा। उन्होंने आगे कहा कि यह वो भारत नहीं होगा जिसके लिए महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद और बाकी स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष किया था।

अगर किताब का विषय और इनका यह ताजा बयान महज इत्तेफाक है, तो यह वाकई एक बेहद खूबसूरत इत्तेफाक है। और अगर यह सुनन्दा पुष्कर की मौत के चार साल बाद दिल्ली पुलिस द्वारा दायर चार्ज शीट का परिणाम है तो दुरभाग्यजनक है। खैर जैसा कि होता आया है, कांग्रेस ने थरूर के इस बयान से तत्काल ही किनारा कर लिया।

कांग्रेस की स्थिति तो आज ऐसी है कि गैरों में कहाँ दम था, हमें तो अपनों ने लूटा हमारी कश्ती वहाँ डूबी जहाँ पानी कम था। पहले मणिशंकर अय्यर और अब शशि थरूर। इसलिए उसके पास इन नेताओं और उनके बयानों से खुद को किनारे करने के अलावा कोई चारा बचता भी नहीं है।

क्योंकि आज कांग्रेस की डूबती नैया पर सवार ये नेता खुद को और अपनी पहचान को बचाने में इस प्रकार की बयानबाजी करके जहाँ कांग्रेस के लिए नई नई मुश्किलें खड़ी कर देते हैं वहीं भाजपा के दोनों हाथों में लड्डू थमा देते हैं। रही थरूर के हिन्दू पाकिस्तान के बयान की बात तो यह जो नई शब्दावली इन्होंने गढ़ी है उसकी नींव ही कमजोर है। क्योंकि जिस शब्द में हिन्दू शब्द जुड़ जाता है वो स्वयं ही बन्धन मुक्त हो जाता है। न तो उसे किसी सीमा में बाँधा जा सकता है न किसी एक विचार में । क्योंकि हिन्दू होना हमें यह आजादी देता है कि हम ईश्वर को मानें या ना मानें फिर भी हम हिन्दू हो सकते हैंए हम मूर्ति पूजा करें या न करें फिर भी हम हिन्दू हो सकते हैं, हम ईश्वर को किसी भी रूप में देखें या फिर न भी देखें फिर भी हम हिन्दू हो सकते हैं हम मन्दिर जाएं या न जाएं फिर भी हम हिन्दू हो सकते हैं। हम व्रत उपवास करें या ना करें फिर भी हम हिन्दू हो सकते हैं। हम सिख हो कर भी हिन्दू हैं हम जैन होकर भी हिन्दू हैं।

क्योंकि हमें बताया गया है कि एक महाज्ञानी पंडित भी रावण बन सकता है और एक डाकू भी रामायण लिख सकता है। क्योंकि हमें बताया गया है कि जन्म नहीं कर्म महान होता है। इसलिए इस देश के हर आदमी की पहचान उसके देशहित या देशविरोधी कर्मों से ही होगी किसी अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक परिवार में जन्म लेने से नहीं।

इस देश की मिट्टी मेंए हवा में, पानी में वो बात हैए इस देश के हर शख्स में वो जज्बात हैं कि किसी भी सूरत में यह देश हिन्दू पाकिस्तान बन ही नहीं सकता यह हर हाल में हिन्दू हिन्दुस्तान था, है और हमेशा ही रहेगा। शायद इसीलिए यूनान मिस्र व रोमा सब मिट गए जहाँ से कुछ बात ऐसी है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

डॉ नीलम महेंद्र
(ये लेखक के अपने विचार है)

राजकाज

अपनों पर भी लगाम लगाएं

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर के श्हिंदू पाकिस्तानश् वाले विवादित बयान से कांग्रेस ने किनारा तो कर लिया, लेकिन बात जहां तक जानी चाहिए थी वहां तक पहुंच ही ही गई। इसलिए जहां भाजपा के लोग इसे लेकर कांग्रेस के खिलाफ बयान देने में जुट गए तो वहीं कुछ ऐसे भी नेता हैं जो खुलकर थरुर के समर्थन में आते हुए दिख रहे हैं। बहरहाल थरूर को इस तरह के बयान नहीं देने और संयम बरतने की नसीहत कांग्रेस ने खुद दे दी है। इसके साथ ही कांग्रेस ने यह भी कहा है कि भारत का लोकतंत्र इतना मजबूत है कि देश कभी पाकिस्तान नहीं बन सकता। इसके बाद विचारकों और शुभचिंतकों ने कहना शुरु कर दिया है कि यह चुनाव का समय है और कांग्रेस को अपने ही नेताओं पर लगाम लगाकर रखना होगा, वर्ना इनके बयान पार्टी की मिट्टी पलीत करवा देंगे।

कौन किसके खिलाफ खोलेगा मोर्चा

अभी तक तो यही लग रहा था कि जम्मू.कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती भाजपा के खिलाफ मोर्चा खोलकर अपनी जड़ों को मजबूती प्रदान करेंगी, लेकिन यहां सब उलटा.पुल्टा होता नजर आ रहा है। दरअसल पीडीपी के बागी विधायकों को अपने साथ लाने के लिए भाजपा ने खुद ही महबूबा के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। हद यह है कि पीडीपी के ही कई विधायक सार्वजनिक तौर पर महबूबा मुफ्ती के खिलाफ बयान दे चुके हैं। यहां तक कि पार्टी के बागी नेता इमरान अंसारी ने हाल ही में अलग मोर्चा बनाने का ऐलान करके सभी को चौंका दिया था। अब जबकि भाजपा ने महबूबा को अलगाववादियों से संबंध रखने जैसे गंभीर आरोप लगा दिए हैं तो समझा जा सकता है कि किसने किसके खिलाफ मोर्चा खोला हुआ है।

मानव मूल्यों की पुर्नस्थापना की जरूरत

भवन को खड़ा करने के लिये आधार स्तंभों की जरुरत होती है। बिना आधार के भवन स्थिर ही नहीं हो सकता। स्थायी और सुन्दर दिखना और उसकी सजावट प्रभावी होना तो बाद की बात है। समाज का सारा कार्य.व्यवहार मानव मन पर टिका हुआ है। जैसा मन सोचता विचारता है वैसा ही सारा कार्य, व्यापार व हर व्यवहार होता है। कहा जाता है यह कलयुग है और अनेकों बुराइयां कलयुग के कारण उत्पन्न हो गई है। कलयुग का एक अर्थ तो अधर्म का युग लगाया जाता है किन्तु इसका दूसरा अर्थ मशीनों का युग भी है। विज्ञान की क्रमशः प्रगति से वे अधिकांश कार्य जो प्राचीन काल में मनुष्य हाथों से परिश्रम करके करता था अब मशीनों के द्वारा बिना अधिक परिश्रम के कम समय में आसानी से किये जा रहे है। दिनों दिन नई मशीनों के आविष्कार होते जा रहे हैं। इससे सुख सुविधापूर्ण नयी व्यवस्थायें हर क्षेत्र में बढ़ती जा रही है। इस परिवर्तन ने मनुष्य को आराम तलब बना दिया हैं। जीवन को हर क्षेत्र में रहन.सहन, खान.पान, नव निर्माण और कार्यव्यवहार के रंग.रूप व जीवनशैली को बदल कर रख दिया है। इस आराम से कार्य करने की आदतों ने सुख.सुविधायें जुटाने के लिये धन के महत्व को बढ़ा दिया है। इनकी प्राप्ति के लिये मनुष्य की मनोवृत्ति बदल गई है। पहले जहां हर काम के लिये निरन्तर ईमानदारी से कठिन परिश्रम और समय जरूरी था वहां अब धन से मशीनों को खरीदकर कम समय में सब साधन प्राप्त कर लेने की मनोवृत्ति को बढ़ावा मिला है। इसी मनोवृत्ति ने दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन कर दिया है। जीवन में पुरातन मूल्यों को बदला हुआ देखा जाता है। हमारे जीवन के चार पुरूषार्थों का पुराना क्रम था धर्म, अर्थ, काम, जो मोक्ष प्राप्ति का आधार होते थे। अब उनका क्रम प्राथमिकता की दृष्टि से अर्थ काम और धर्म हो गया है जिससे अर्थ धन का महत्व सबसे अधिक हो गया है। काम अर्थात कामना पूर्ति जो धन से ही संभव है उसका स्थान महत्वपूर्ण और सबल हो गया है। परिणामतः समाज हित में व्यक्ति की धर्म के पालन करने की ललक जिसमें ईमानदारी का स्थान सर्वोच्च था, गुम सा गया है, और मोक्ष अर्थात जीवन में पवित्रता से भगवत प्राप्ति का भावद्ध प्रायः गायब हो चला है। धर्म की पालना में परम शक्ति के प्रति जो श्रद्धा और निष्ठाभाव था वह प्रायः समाप्त हो गया है क्योंकि पहले उस परम शक्ति की कृपा पर ही जीवन का सुखी होना माना जाता था, अब वह भाव उठ गया है। हर सुविधा को धन से खरीद लेने का विचार बढ़ गया है। धर्म जीवन को ईमानदारी का पालन करने की जो प्रेरणा देता रहा है अब बहुतों के मन से दूर हो गया है। इसका ही परिणाम इस कल.युग में अनाचार, अत्याचार के बढ़ जाने का प्रमुख कारण बन गया है और दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। धार्मिक भाव मन पर जो गहन अंकुश रखता था वह अंकुश समाप्तप्राय हो चुका है। धार्मिक भावना व्यक्ति को आत्मनियंत्रित रखती थी। मनोविकारों से उत्पन्न गलत कार्यों के न करने की प्रेरणा देती थी। आत्मनियंत्रित मन को उनके मानने में सुख अनुभूति होती थी और जीवनों में सदाचार से पुण्य लाभ कर ईश्वर प्राप्ति की भावना की प्रेरणा देती थी।

वर्तमान काल में समाज की मनोवृत्ति बदलने से अब स्व नियंत्रण रहा नहीं राजकीय या संवैधानिक रूप से तैयार किये गये कानून कायदों का मन पर गहरा असर मिट गया है , समाज का डर भी नहीं इसलिये हर व्यक्ति के सामने केवल धन ही जीवन का परम लक्ष्य हो गया है। धन ही भगवान हो गया है। इसी का परिणाम है कि इस कल.युग मशीन युग में हर व्यक्ति मनमाना व्यवहार करने लगा है। जीवन के धार्मिक व आध्यात्मिक मूल्य अमान्य हो चले है। सुख शांति और जीवन में अनुशासन के लिये उन पुराने हितकारी मूल्यों की पुर्नस्थापना आवश्यक हो गई है। सदाचार की मान्यताओं से ही समाज का सुचारू विकास संभव है। जीवन के हर क्षेत्र में व्यक्ति का संयमित मन ही सही सोच विचार व कार्य कर समाज को सुखी रख सकता है। धार्मिक भावना ही जीवन मूल्यों को निर्धारित व नियंत्रित करती है। अतः आज मानव मूल्यों की पुर्नस्थापना बहुत आवष्यक है।

प्रो. सीबी श्रीवास्तव
(ये लेखक के अपने विचार है)